Roll No. : .....

Total No. of Questions : **13**] [Total No. of Printed Pages : **7**

A–349

B.A. (Part–III) (NC) Examination, 2023

HINDI LITERATURE

Paper - II

(निबन्ध एवं भाषा)

*Time : **3** Hours*] [*Maximum Marks : **100***

खण्ड–अ **(अंक : 2 × 10 = 20)**

नोट :– सभी **दस** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **50** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **2** अंक का है।

खण्ड–ब **(अंक : 8 × 5 = 40)**

नोट :– आठ में से किन्हीं **पाँच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **200** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **8** अंक का है।

खण्ड–स **(अंक : 20 × 2 = 40)**

नोट :– चार में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **500** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **20** अंक का है।

खण्ड–अ

1. (i) ''स्थान भ्रष्टा न शोभते दंता केशा नखा नराः'' का भाव स्पष्ट कीजिए।

(ii) निबंधकार बालकृष्ण भट्ट के अनुसार हठ एवं मन की दृढ़ता में मूलतः क्या अंतर है ?

(iii) ''सामाजिक जीवन में क्रोध की आवश्यकता बराबर पड़ती है।'' रामचंद्र शुक्ल के अनुसार इस कथन की सार्थकता समझाइए।

(iv) 'प्रेमचंद और भाषा की समस्या' निबंध में डॉ. रामविलास शर्मा द्वारा व्यक्त विचारों का संक्षिप्त परिचय करवाइए।

(v) पं. विद्यानिवास मिश्र अपने निबंध 'तमाल के झराखे से' में अपने पाठकों को तमाल के झरोखे से क्या दिखाना चाह रहे हैं ? स्पष्ट कीजिए।

(vi) राजस्थानी भाषा एवं उसकी बोलियों का संक्षिप्त परिचय बताइए।

(vii) देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता को प्रमाणित करने वाली किन्हीं **चार** विशेषताओं की जानकारी दीजिए।

(viii) हिन्दी के किसी एक आलोचक का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

(ix) निबंधकार प्रतापनारायण मिश्र की साहित्य साधना की जानकारी दीजिए।

(x) हरीश भदानी की हिन्दी साहित्य को क्या देन है ? संक्षेप में समझाइए।

खण्ड–ब

2. जो लोग यह मानते हैं कि कुछ लोगों की किसी खात बात की तरफ झुकावट इत्तिफाक से है, ऐसी ही बात आ पड़ी है कि वह उस बात को चाहने लगता है या अच्छी तरह उस बात को समझता है, इस सबका कारण बिल्कुल इत्तिफाक ही है, हमारी जान में ऐसा मानने वालों की बड़ी भूल है। आदमी की

पसंद, तबीयत, मिजाज, खयालात, रुचि और अरुचि, इसमें छोटी-से-छोटी या बड़ी-से-बड़ी बातों पर इत्तिफाक का उतना ही असर है, जितना इत्तिफाक से पेड़ में कानी-खोतरी पत्तियां या फूल-फल लग सकते हैं। इन्हीं बातें पर सोचने से इस प्रश्न का उत्तर मिलता है कि कैसे मानसिक दृढ़ता रहने से, किसी के खयालात में वह जोर आता है, जिसे देख या सुन लोग चमत्कृत होते हैं। जब यह माना गया है कि आदमी का मन उसके खयालात के साथ ऐसा नधा है जैसे वृक्ष अपने एक-एक रगोरेशे से नधा हुआ है, तो यह सिद्ध हुआ कि किसी मनुष्य के खयालात उसके मन और जबान पर वैसे ही हरे-भरे मालूम होंगे जैसे अपने स्थान में जमा हुआ पेड़ हरा-भरा मालूम होता है।

3. किसी बात का बुरा लगना, उसकी असह्यता का क्षोभयुक्त और आवेगपूर्ण अनुभव होना, अमर्ष कहलाता है। पूर्ण क्रोध की अवस्था में मनुष्य दुख पहुँचाने वाले पात्र की ओर ही उन्मुख रहता है—उसी को भयभीत या पीड़ित करने की चेष्टा में प्रवृत्त रहता है। अमर्ष में दुख पहुँचाने वाली बात के ब्यौरों पर और उसकी असह्यता पर विशेष ध्यान रहता है। इसकी ठीक व्यंजना ऐसे वाक्यों में समझनी चाहिए—''तुमने मेरे साथ यह किया, वह किया। अब तक तो मैं सहता आया, अब नहीं सह सकता।'' इसके आगे बढ़कर जब कोई दाँत पीसता और गरजता हुआ यह कहने लगे कि ''मैं तुम्हें धूल में मिला दूंगा, तुम्हारा घर खोदकर फैंक दूंगा'' तब क्रोध का पूर्ण स्वरूप समझना चाहिए।

4. आप स्वदेश चिंता के लिए कुछ काल देशान्तर में रह आएं तो आपकी बड़ाई है। पर हाँ, यदि वहाँ जा के यहाँ की ममता छोड़ दीजिए तो आपका जीवन उन दांतों के समान है जो होंठ या गाल कट जाने से अथवा किसी कारण विशेष से मुँह के बाहर रह जाते हैं और सारी शोभा खो के भेड़िए के से दाँत दिखाई देते हैं। क्यों नहीं, गाल और होंठ दाँतों का परदा है, जिसके परदा न रहा अर्थात् स्वजातित्व की सादारी न रही, उसकी निरलज्ज जिंदगी व्यर्थ है। कभी आपको दाढ़ की पीड़ा हुई होगी तो अवश्य जी चाहा होगा कि इसे उखड़वा डालें तो अच्छा है। ऐसे ही हम उन स्वार्थ के अंधों के हक में मानते हैं, जो हैं हमारे साथ, बने हमारे ही देशभाई पर सदा हमारे देश, जाति के अहित ही में तत्पर रहते हैं। परमेश्वर उन्हें या तो सुमति दे या सत्यानाश करे, उनके होने का हमें कौन सुख है।

5. साहित्य मुखरित जीवन है, जहवन का ही आत्म–चिंतन है। जीवन की आवश्यकताओं को भूलकर हम साहित्य का चिंतन नहीं कर सकते। हमारे यहाँ का साहित्य शब्द 'लिटरेचर' से कुछ अधिक व्यंजना रखता है। साहित्य में 'सहित इकट्ठे' होने का समन्वय का भाव लगा हुआ है–''सह एव सहितं तस्य भावः साहित्यम्''। दूसरी व्युत्पत्ति है–''हितेन सह सहितं तस्य भावः साहित्यम्''। साहित्य की इन्हीं दोनों व्युत्पत्तियों से हमको इन मूल्यों के प्रश्न को हल करने में सहायता मिलेगी। यह बात तो सभी मानेंगे कि जिसके जीवन में मूल्य है, उसका साहित्य में मूल्य है। साहित्य के मूल्य जीवन के मूल्यों से भिन्न नहीं। अब प्रश्न यह होता है कि इनमें कोई सर्वप्रधान है कि जिसमें हाथी के पैर के समान सबके पैर आ जाएं अथवा सब एक-सा महत्त्व रखते हैं और देवताओं के समान कोई छोटा-बड़ा नहीं है। यह प्रश्न टेढ़ा है।

6. मनुष्य को सुख कैसे मिलेगा ? बड़े-बड़े नेता कहते हैं, वस्तुओं की कमी है, और मशीन बैठाओ, उत्पादन बढ़ाओ, और धन की वृद्धि करो, और बाह्य उपकरणों की ताकत बढ़ाओ। एक बूढ़ा था। उसने कहा कि बाहर नहीं, भीतर की ओर देखो। हिंसा को मन से दूर करो, मिथ्या को हटाओ, क्रोध और द्वैष को दूर करो, लोक के लिए कष्ट सहो, काम करने की बात सोचो। उसने कहा—प्रेम ही बड़ी चीज है, क्योंकि वह हमारे भीतर है। उच्छृंखलता पशु की प्रवृत्ति है, 'स्व' का बंधन मनुष्य का स्वभाव है। बूढ़े की बात अच्छी लगी या नहीं, पता नहीं। उसे गोली मार दी गई। आदमी के नाखून बढ़ाने की प्रवृत्ति ही हावी हुई। मैं हैरान होकर सोचता हूँ—बूढ़े ने कितनी गहराई में बैठकर मनुष्य की वास्तविक चरितार्थता का पता लगाया था।

7. हमारे विशाल देश में हिमालय की अनन्त हिमराशि ने जिन वारि-धाराओं को जन्म दिया है, उनमें उत्तरापथ को सींचने वाली गंगा और यमुना नाम की नदियाँ जीवन की धमनियों की तरह हमारे ऐतिहासिक चैतन्य की साक्षी रही हैं। उनकी गोद में हमारे पूर्व पुरुषों ने सभ्यता के प्रांगण में अनेक नए खेल खेले। उनके तटों पर जीवन का जो प्रवाह प्रचलित हुआ, वह आज तक हमारे भूत और भावी जीवन को सींच रहा है। भारत माता है और हम उसके पुत्र हैं, यह एक सच्चाई हमारे रोम-रोम में बिंधी हुई है। नदियों की अंतर्वेदी में पनपने वाले आदि युग के जीवन पर अब हम जितना अधिक विचार करते हैं, हमको अपने विकास और वृद्धि की सनातन जड़ों का पृथ्वी के साथ संबंध उतना ही अधिक घनिष्ठ जान पड़ता है।

8. इस समय भारतीय नारी के पास कौन-सा विशिष्ट गुण नहीं है, जिसे पाकर किसी भी देश की मानवी देवी नबन सकती हो। उसमें उस सहनशक्ति की सीमा समाप्त है, जिसके द्वारा मनुष्य घोर से घोरतर अग्नि-परीक्षा हँसते-हँसते पार कर सकता है और अपने लक्ष्य के मार्ग में बाधाओं पर बाधाएँ देखकर नहीं सिहरता। उसमें वह त्याग है, जो मनुष्य की क्षुद्र से क्षुद्र स्वार्थवृत्ति को क्षण में नष्ट कर डालता है और उसे अन्य के कल्याणार्थ अपनी आहुति के लिए प्रस्तुत कर देता है, उसमें मनुष्य को देवता की पंक्ति में बैठा देने वाली वह पवित्रता है, जो मरना नहीं जानती तथा उसमें हमारी संस्कृति का वह कोष है, जिसकी अन्य के द्वारा रक्षा संभव ही नहीं थी। वह आज भी त्यागमयी माता, पतिव्रता पत्नी, स्नेहमयी बहिन और आज्ञाकारिणी पुत्री है, जब संसार के जागृत देशों की स्त्रियाँ भौतिक सुख भोग पर अपनी युगजीर्ण संस्कृति न्यौछावर किए दे रही हैं। इन्हें त्याग के, बलिदान के और स्नेह के नाम पर सब कुछ आता है, परन्तु जीने की वह कला नहीं आती, जो इन अलौकिक गुणों को सजीव कर देती हैं।

9. स्वतंत्रता और समानता दो बुनियादी आधुनिक मूल्य हैं, जो आधुनिक हिंदी लेखक के भी केन्द्रीय सरोकार हैं। जैनेन्द्र और अज्ञेय, दोनों ही स्वतंत्रता को एक मूल्य की तरह स्वीकार करते हैं लेकिन यह स्वतंत्रता अमर्यादित नहीं बल्कि एक गहरे नैतिक बोध से परिचालित है। इसलिए स्वतंत्रता दोनों के यहाँ अधिकार से अधिक दायित्व है। जैनेन्द्र के मृणाल, सुनीता, कल्याणी आदि सब जीवंत चरित्र हैं—प्रामाणिक जीवन-चरित्र लेकिन उनकी प्रामाणिकता उस नैतिक द्वंद्व में से उपजती है, जो किसी एक व्यक्ति का नहीं, समूचे भारतीय समाज का द्वंद्व है। जैनेन्द्र के नारी-चरित्र स्वाधीन है, लेकिन इस स्वाधीनता में एक गहरी मूल्य-चेतना है। उनके पात्र विद्रोही हैं, पर उनका विद्रोह एक नैतिक बोध से प्रसूत है, वह किसी स्वच्छंदतावादी या रोमांटिक दृष्टि का प्रतिफलन नहीं है।

खण्ड–स

10. बाबू गुलाबराय कृत निबंध 'साहित्य का मूल्य' में वर्णित मूल विचारों को सप्रमाण स्पष्ट कीजिए।

11. ''मूल प्रश्न असली और नकली का नहीं, नयी-आधुनिकता और पुरानी-आधुनिकता का है और अपनी-अपनी जगह पर दोनों ठीक हैं। कम से कम हिंदुस्तान में दोनों का सार्थक अस्तित्व दिखाई पड़ रहा है।'' कुबेरनाथ राय के इस कथन को ध्यान में रखते हुए आधुनिकता के नए एवं पुराने स्वरूप की युक्तियुक्त पहचान करवाइए।

12. 'हिन्दी निबंध की तात्विक विवेचना' विषय पर एक आलोचनात्मक निबंध लिखिए।

13. ''राजस्थान का हिन्दी साहित्य वृहद स्तर पर हिन्दी की सम्मानित निधि सदृश है।'' इस कथन के आलोक में हिन्दी साहित्य के विकास में राजस्थान के योगदान को रेखांकित कीजिए।